कई लोगों का एक सवाल है, 'भारत दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक देश है। आपको एक ही शहर में कई मंदिर मिलेंगे। अधिकांश घरों में भगवान के लिए एक अलग कमरा या सजावटी लकड़ी का आशियाना होता है जहां मूर्तियों को रखा जाता है। कई अवसरों पर विशाल धार्मिक उत्सव किए जाते हैं। लेकिन, अत्यधिक भ्रष्टाचार भी है। अभी एक केस में कोई न्यूज चैनल देखेगा तो ऐसा लगेगा की आरोपी के पक्ष में पोलिटीशियन, सितारे, पुलिस, डॉक्टर, दुबई का अंडरवर्ल्ड सब मिलके काम कर रहे है। जाँच एजन्सी का भी कोई भरोसा नही कि वो सच बाहर लायेगी। कोर्ट मिडिया पर अंकुश लगाना चाहती है। किस कानून के तहत? पता नही। स्थिती ईतनी गंभीर हो गयी है। ये सब क्यों?'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

उत्तर ये है कि भारत में देखी गई पूजा या भक्ति जो भी है, वो मुख्य रूप से इंद्रियों की भक्ति है। लोग हाथ से भगवान की पूजा करते हैं। वे मुख से भगवान का नाम लेते है। कान द्वारा भक्तिवादी प्रवचन और भक्ति गीत सुनते हैं। पैर से धार्मिक तीर्थयात्रा करते है। न केवल हिंदु बल्कि मुसलमान या अन्य धर्मों के लोग भी इंद्रियों द्वारा सबकुछ करते हैं। इसका अर्थ है कि मन भगवान का ध्यान नहीं करता। मन भगवान को याद करने की कोशिश नहीं करता। चूंकि ईश्वर का स्मरण मन से गायब है, इसलिए ये सभी प्रयास व्यर्थ हैं। सब पापों की जड़ मन है। मन बीमार है। भगवान का स्मरण उसकी दवा है जो कोई नही कर रहा है।

भगवान कहते है कि 'मन ही बंधन (मृत्यु सहित पीड़ा) और मोक्ष (शाश्वत आनंद) का एकमात्र कारण है।' यदि

पेट में बीमारी हो और इलाज के लिए दवा आंख में डाली जाय तो मरीज को कैसे ठीक होगा? यह किसी अन्य समस्या को जन्म दे सकता है। मन के लिए ईश्वरीय दवा की आवश्यकता होती है। ईश्वर की भक्ति में इंद्रियां सिर्फ सहायक हैं। लोगों को पता नहीं है कि भगवान का रूपध्यान सबसे महत्वपूर्ण है। सभी अभ्यास, जो रूपध्यान से रहित है, वैसाही है जैसे आत्मा के बिना शरीर। एक लाश की तरह होता है। लाश कुत्तेऔर गिद्दड के लिए भोजन है, उसी तरह से भगवान से दूर मन क्रोध, यौन इच्छा, ईर्ष्या, पाखंड आदि द्वारा खाया जाता है। इस तरह की इंद्रियों वाली भक्ति या पूजा मन की समस्याओं को मिटाने में सक्षम नहीं है। चूंकि मन की बीमारी का इलाज नही हो रहा है, इसलिए बीमारी बढ़ रही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

फिर भी, कुछ भी न करने से ये बेहतर है।इंद्रियों से भक्ति करने वालों के यदि कोई ऐसा व्यक्ति मिल जायेगा जो उन्हें इंद्रियों के साथ मन लगाने के लिए कहेगा तो उनका काम बन जायेगा। इसके अलावा, बाहरी धार्मिक वातावरण के कारण कई लोग प्रवचन आदि सुनकर सही भक्ति करने लगते है। भारत में कई लोगों ने दिव्य आनंद हासिल कर लिया है। चूंकि यह वातावरण अन्य देशों में गायब है, इसलिए वहा ऐसे लोगों का मिलना मुश्किल है जो भगवान की खोज में हैं और दिव्य खुशी प्राप्त करने में सफल हैं। इसलिए, यह कहा जाता है कि भारत में जन्म मिलना ये भगवान की बडी कृपा है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132